भूमिका

प्रेम एक राजनीतिक शब्द है। यह शब्द के स्तर से जब भाव के स्तर पर उतरता है तब हृदय से जुड़ा होता है और हृदय से राजनीति नहीं होती। तब प्रेम जीवन होता है, जीने का एक ढंग होता है। इस कारण उसकी प्रासंगिकता उतनी ही है जितना कि जीवन प्रासंगिक है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में प्रारम्भ से ही प्रेम का विस्तृत एवं उदात्त चित्रण हुआ है। जहाँ तक हिंदी और उर्दू साहित्य के विभेद का प्रश्न है तो ये विभेद मात्र भाषा के स्तर पर ही है। साहित्य की मूल संवेदना दोनों मे एक जैसी ही है। यहाँ दोनों ही विवेच्य कवि घनानंद और वली दकनी रीतिकाल के अंतर्गत आते हैं। दरअसल हिंदी के रीतिकालीन साहित्य की झलक तत्कालीन उर्दू और उड़िया साहित्य में अनायास ही पायी जा सकती है। हालाँकि घनानंद तथा वली दकनी के साहित्य में पर्याप्त अंतर है। रीतिबद्ध कवियों के साहित्य में रीति के तत्वों की जितनी प्रचुरता है उतनी घनानंद के साहित्य में नहीं है। घनानंद और वली दकनी लगभग समकालीन हैं। युगीन चेतना के कारण रीति के तत्व और दरबारी परिवेश की झलक दोनों के काव्य में आंशिक रूप से देखने को मिलती है। रीतिकाल के अंतर्गत आने वाले काव्यों में प्रेम के कई रूप मिलते हैं – रीति के ढाँचे में ढला हुआ प्रेम, स्वच्छंद काव्यधारा का उन्मुक्त ऐकांतिक प्रेम, भक्त कवियों का भगवत प्रेम, प्रेमाख्यानक काव्यों का आध्यात्मिक तथा लौकिक प्रेम और कतिपय संत कवियों का निर्गुण प्रेम। यहाँ घनानंद और वली दकनी के काव्य में प्रेम के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय ‘ घनानंद और वली दकनी के काव्य में प्रेम का स्वरूप ’ है जिसमें घनानंद और वली दकनी की समस्त रचनाओं को आधार न बनाकर घनानंद के चुनिंदा पदों और वली दकनी की चुनिंदा ग़ज़लों को ही आधार बनाया गया है। ग़ज़लों को आधार इसलिए बनाया गया है क्योंकि ग़ज़ल एक प्रेमाख्यानक काव्यरूप है और इसमें प्रेम- भावना का चित्रण अन्य काव्यरूपों की तुलना में अधिक होता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है –

पहले अध्याय को पाँच उप अध्यायों मे विभक्त करते हुए प्रेम के व्युत्पत्तिपरक अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, विविध रूप, विशेषताओं और प्रेम के महत्व एवं प्रासंगिकता आदि पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरे अध्याय को दो उप अध्यायों में विभक्त करते हुए पहले उप अध्याय में रीतिकाल के तमाम पहलुओं जैसे- रीति शब्द का अर्थ, रीतिकाल की समय-सीमा, नामकरण और रीतिकाल की तीनों काव्यधाराओं - रीतिसिद्ध,रीतिबद्ध और रीतिमुक्त पर विचार करते हुए दूसरे उप अध्याय में घनानंद के जीवनवृत्त, कृतित्व और योगदान को संक्षेप में बताया गया है।

तीसरे अध्याय को भी दो उप अध्यायों में विभक्त करते हुए पहले उप अध्याय में दक्खिनी काव्यधारा का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है जिसके अंतर्गत दक्खिनी शब्द से अभिप्राय,दक्खिनी के उद्भव, नामकरण, काल-विभाजन और दक्खिनी के तीनों कालों- प्रारंभिककाल, मध्यकाल और उत्तरकाल आदि बिंदुओं

पर संक्षिप्त में विचार किया गया है। दूसरे उप अध्याय में वली दकनी के जीवनवृत्त,कृतित्व और योगदान को बताया गया है।

चौथे अध्याय के अंतर्गत घनानंद के काव्य में प्रेम के स्वरूप का विश्लेषण-विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

पाँचवें अध्याय में वली दकनी के काव्य में प्रेम के स्वरूप का विश्लेषण-विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

अंत में उपसंहार में घनानंद और वली के काव्य में प्रेम के स्वरूप की तुलना करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध में तुलनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।

कोई भी शोध कार्य अकेले करना संभव नहीं है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में भी कई लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सर्वप्रथम मैं अपनी माता श्रीमती फ़रहत जमाल सिद्दीक़ी और अपने पिता श्री अबसार अहमद सिद्दीक़ी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने तमाम संघर्षों के बावजूद मुझे इस शोध कार्य तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया, और न मात्र अवसर अपितु निरंतर मेरे प्रेरणा-स्रोत भी बने रहे।

इसके पश्चात् मैं अपनी शोध निर्देशक प्रो.प्रीति सागर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। जिनके निर्देशन में रहकर मैंने यह शोध कार्य पूरा किया। आपके मार्ग निर्देशन के अनुसार मैं अपने शोध विषय पर उत्तरोत्तर कार्य करती गयी।

इसके अतिरिक्त मैं डॉ. रेखा अवस्थी (सेवानिवृत्त, दयाल सिंह कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस लघु शोध- प्रबंध की रूपरेखा बनाने में मेरी पर्याप्त सहायता की। साथ ही मैं डॉ. सुनील कुमार मांडीवाल (सहायक प्रोफ़ेसर, दयाल सिंह कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ. मुकेश गर्ग (सेवानिवृत्त, दिल्ली विश्वविद्यालय), और डॉ. रामानुज अस्थाना (सहायक प्रोफ़ेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनकी मुझे इस शोध से संबंधित बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अपने मित्रों रौशन कुमार नायक और कृष्णमोहन का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपना लैपटॉप उपलब्ध कराकर टंकण संबंधी कार्य में मेरी सहायता की।